काव्य हेतु

- काव्य हेतु का अर्थ है – काव्य की निर्मिती के कारण |
- किसी व्यक्ति में काव्यरचना का सामर्थ्य उत्पन्न करा देनेवाले कारण काव्य हेतु कहलाते है | अर्थात असे कारण जिनकी सहायता से किसी भी साहित्यिक रचना का आविष्कार संभव हो सकता है | काव्यशास्त्र में मुख्यतः ४ काव्य हेतु माने जाते है | वह इस प्रकार है -
- **काव्य हेतु**
- १.प्रतिभा
- २.व्युत्पत्ति
- ३.अभ्यास
- ४.समाधि

१.प्रतिभा

- आचार्य भामह काव्य रचना का प्रमुख हेतु प्रतिभा को मानते है| प्रतिभा को काव्यसृजन की शक्ति कहा जाता है |
- अधिकांश आचार्य प्रतिभा को जन्मजात / जन्मांतर्गत संस्कार मानते है|उनके मतानुसार जन्मा –जन्मान्तरों से आत्मा पर जो संस्कार पड़ते है उनसे ही प्रतिभा का उदय होता है |
- श्रेष्ठ साहित्य निर्मिती के लिए प्रतिभा महत्वपूर्ण काव्य तत्त्व मन जाता है|
- नवीन विचारों का सृजन प्रतिभा द्वारा होता है |

2.व्युत्पत्ति

- सामान्यतः व्युत्पत्ति का शाब्दिक अर्थ है - ज्ञान,निपुणता,पांडित्य या विद्वत्ता |
- व्युत्पत्ति का अभिप्राय है – लोकव्यवहार , शास्त्र,काव्य आदि का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करना |
- प्रतिभा और ज्ञान का निकट संबंध है | प्रतिभा काव्य का बीज है तो व्युत्पत्ति बीज का विकास करने में सहयोग करनेवाली सखी है |
- कवी को सभीं विषयों का व्यवहारिक ज्ञान होना चाहिए |
- उचित और अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है |
- व्युत्पत्ति दो प्रकार की होती है
- १ शास्त्रीय २. लौकिक

३.अभ्यास

- काव्यरचना का तीसरा हेतु अभ्यास है | राजशेखर के अनुसार निरंतर प्रयास करेना अभ्यास है |काव्य रचेना की पुनः पुनः प्रवृति अभ्यास कहलाती है|सभी आचार्यों ने अभ्यास को प्रतिभा का पोषक माना है |अभ्यास से काव्य कौशल में निखार आता है |

- आचार्य वामन –
- " अभ्यासोहि कर्मसु कौशल भावहिति |"
- अर्थात – अभ्यास के द्वारा ही कवी कर्म में कुशलता प्राप्त की जा सकती है |

- अभ्यास का योगदान श्रेष्ठ और सुंदर काव्यरचना के लिए होता है |

४.समाधि

- राजशेखर ने समाधि को चतुर्थ काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया है |मन की एकाग्रता को समाधि कहते है |समाधि ध्येय के साथ एकाकार होने की प्रक्रिया है |

इस प्रकार सारांशतः हम कह सकते है की काव्य सृजन में काव्य हेतुओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है |जिसके माध्यम से हम काव्य आस्वाद प्राप्त कर सकते है |